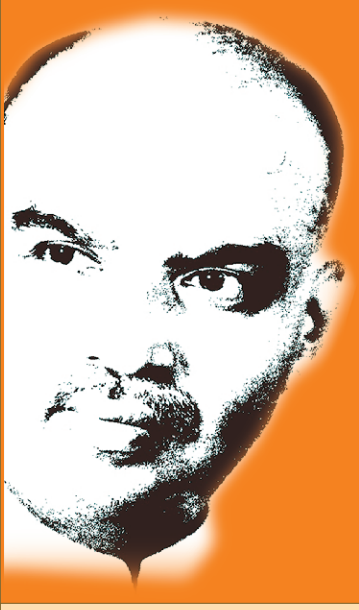

SPMRF

OCCASIONAL PAPER

3

January 2013

चुनौती और रणनीति
भारत की विदेश नीति पर पुनर्विचार

विषय पर परिचर्चा

राजदूत शशांक

पूर्व राजदूत, डेनमार्क, दक्षिण कोरिया और लीबिया

तथा

पूर्व विदेश सचिव, भारत

पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका

Wisdom with valour brings glory to the nation

Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

राजदूत शशांक

श्री शशांक जी 1966 में भारतीय विदेश सेवा से जुड़े थे। आप पूर्व में भारत के विदेश सचिव रहे हैं। आप दिसम्बर, 2003 से जुलाई 2004 तक विदेश सचिव के पद पर थे। आप डेनमार्क, दक्षिण कोरिया और लीबिया में भारत के राजदूत रहे हैं।

विदेश मंत्रालय की ओर से आपने यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका जैसे प्रमुख देशों में सचिव के रूप में कार्य किया।

अपने लम्बे राजनयिक जीवन के दौरान आपने अनेक देशों में विभिन्न पदों पर काम किया, जिनमें पाकिस्तान, डेनमार्क, दक्षिण कोरिया, लीबिया, वियतनाम, ब्राजील शामिल हैं और उन्होंने संयुक्तराष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन में भी कार्य किया है।

वर्तमान में आप अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् के अध्यक्ष हैं।

Editorial Assistance : Amarjeet Singh, *Research Associate & Programme Co-ordinator*
Published by : Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation, 11, Ashok Road, New Delhi - 110001
E-mail : spmrfoundation@gmail.com, Telephone : 011 - 48005769
Views expressed in this paper are those of the author and do not necessarily reflect the position of the organisation.
copyright © SPMRF, 2013

चुनौती और रणनीति : भारत की विदेश नीति पर पुनर्विचार

मैं आप सभी लोगों का आभारी हूं कि आज आप हमारे साथ यहां उपस्थित हुए हैं। डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान के निदेशक डा. अनिर्बान गांगुली जी भी आज हमारे साथ उपस्थित हैं। आप नए–नए शोध कार्य के उपक्रम ले रहे हैं और आपने अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद को भी अपने अधिष्ठान के साथ जोड़ा, इसके लिए हम आपके आभारी हैं। अभी श्री बलबीर जी और श्री राजीव सीकरी जी ने भारतीय विदेश नीति पर बहुत ही बारीकी से जानकारी दी। भारतीय विदेश नीति के संदर्भ मैं केवल दो–तीन बातें कहना चाहता हूं। पहला यह कि संसद के अंदर या प्रेस में केवल यही बाते कहना कि हम यह चाहते हैं और दूसरे लोग कुछ और चाहते है। वे कहते हैं कि हमारी नीति दूसरी है, हमारी नीति सेकुलरिज्म की है। वे यह भी कहते हैं कि हम तो आपको दोस्त बनाना चाहते हैं और डायलाग रखना चाहते हैं। हमारे सामने जो भी चुनौतियां हैं तथा हमारे आगे बढ़ने के जो भी अवसर हैं, उनके लिए रणनीति क्या बनेगी? यह बहुत आवश्यक है कि इन सब विषयों का विस्तृत रुप से विश्लेषण होना चाहिए, जिसके लिए थिंक टैंक और विश्वविद्यालय या इस प्रकार के अन्य संस्थानों को आगे आकर सहयोग करना चाहिए।

हमारे यहां बात चलती है साफ्ट डिप्लोमेसी (नरम कूटनीति) की, एक बार शुरू करते हैं तो फिर रुकते ही नहीं हैं। फिर गाने ही गाते जायेंगे बालिवुड के, और बताये जायेंगे कि शाहरुक खान जी ने करोडों रुपए की कमीज पहनी है ब्रोनाई में या दुबई में। लेकिन हमारे यहां एक और साफ्ट डिप्लोमेसी के नतीजे वाले लोग हैं, जिनको रोमाज् कहते हैं। क्या अंत में हमको रोमाज् बन जाना है? क्योंकि हममें से अधिकतर को यह मालूम नहीं है कि रोमाज् भारत से निकल कर गए हैं। उनके जेनेटिक टेस्ट के आधार पर विशेषज्ञों ने कहा कि उनके जो जेनेटिक गुण हैं वे भारतीय मूल से मिलते हैं। किसी समय में वे मुगलों के सामने झुकना नहीं चाहते थे, तो वे भारत छोड़कर बाहर निकल आए। फिर वे भूल गए कि वे मूलतः कहां के हैं। लेकिन कभी–कभी वे कहते हैं कि हम लोग भारत की भूली हुई संतान (वी आर फारगाटेन चिल्ड्रेन आफ इंडिया) हैं। दूसरी तरफ हमारे पास

''हमारे सामने जो भी चुनौतियां हैं तथा हमारे आगे बढने के जो भी अवसर हैं, उनके लिए रणनीति क्या बनेगी? यह बहुत आवश्यक है कि इन सब विषयों का विस्तृत रुप से विश्लेषण होना चाहिए, जिसके लिए थिंक टैंक और विश्वविद्यालय या इस प्रकार के अन्य संस्थानों को आगे आकर सहयोग करना चाहिए।''

परिचर्चा को समबोधित करते हुए राजदूत शशांक। मंच पर (बाएं से दाएं) राजदूत राजीव सीकरी, राज्यसभा सांसद श्री बलबीर पुंज और अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के प्रधान सचिव श्री श्याम परांडे।

copyright © SPMRF, 2013

जो अनुभव है उसके अनुसार जब पश्चिमी देशों में गुलामी समाप्त हुई तब भारतीय मूल के लोगों को एनडेंचर्स लेबर से प्रतिस्थापित किया गया। अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् उसी को अपना मूल धन बनाकर उन लोगों को साथ में जोड़ने का प्रयास करती रही है। अभी कुछ वर्षों (10 वर्ष) पहले तक वहां उनके आने का दिवस ''कुली डे'' के नाम से मनाया जाता था, क्योंकि वहां भारतीयों को कैटल (पशु) के समान माना जाता था अथवा कुली के समान माना जाता था।

अभी हाल ही में बंग्लादेश संकट के उपर गैरीबॉस की पुस्तक (द ब्लड टेलीग्राफ) प्रकाशित हुई है जिसमें उन्होंने सीधा–सीधा कहा है कि भारतीयों को असभ्य मनुष्य माना जाता था। निक्सन और कीसिंगर हमेशा यही बात करते थे कि कैसे उनको मार लगानी है, ये डरपोक हैं, इनकी जितनी भी पिटायी कर सकते हैं, करें। ये लोग चीन के पीछे भी पड़ गए कि भारत के उपर हमला करो। पाकिस्तान से कहते हैं कि हम आपको हथियार देंगे और यदि नहीं दे सकते तो दूसरे देशों से दिलवा देंगे, इसके लिए पाकिस्तान के ऊपर दबाव डाला गया। रुस के ऊपर दबाव डाला कि आप भारतीयों की मदद नहीं कर सकते हैं, उनको रोकिए। हमको मालूम है कि वे वेस्ट पाकिस्तान को तोड़ना चाहते हैं।

अभी हाल ही में बंग्लादेश संकट के उपर गैरीबॉस की पुस्तक (द ब्लड टेलीग्राफ) प्रकाशित हुई है जिसमें उन्होंने सीधा-सीधा कहा है कि भारतीयों को असभ्य मनुष्य माना जाता था। निक्सन और कीसिंगर हमेशा यही बात करते थे कि कैसे उनको मार लगानी है, ये डरपोक हैं, इनकी जितनी भी पिटाई कर सकते हैं, करें। ये लोग चीन के पीछे भी पड़ गए कि भारत के ऊपर हमला करो। पाकिस्तान से कहते हैं कि हम आपको हथियार देंगे और यदि नहीं दे सकते तो दूसरे देशों से दिलवा देंगे। इसके लिए पाकिस्तान के ऊपर दबाव डाला गया। रुस के ऊपर दबाव डाला कि आप भारतीयों की मदद नहीं कर सकते हैं, उनको रोकिए। हमको मालूम है कि वे वेस्ट पाकिस्तान को तोडना चाहते

हमें यह सोचकर चलना चाहिए कि जिस तरह से हमारी नीतियां बदली हैं पिछले दस साल में, जब से हमारी आर्थिक प्रगति तेज हुई है तो लोगों को यह लगने लगा कि हम केवल कैटल फोडर नहीं है, केवल कुली नहीं है, इनके दिमाग भी बहुत काम करते हैं। हमारे यहां तो लक्ष्मी और सरस्वती का ऐसा मेल रहा है कि यह जरुरी नहीं है की जेब में पैसे हों, लेकिन फिर भी विद्या पायी जा सकती है। यह पूरे विश्व में लोगों को मालूम नहीं था लेकिन अब मालूम हो गया है। अब हम देखते हैं कि कास्मोलॉजी के ऊपर, एस्ट्रोफीजिक्स के ऊपर, मैथमैटिक्स में, हर जगह वे अपने अनुसंधान केंद्रों में भारतीयों को रखना चाहते हैं।

आप पुरानी सभ्यताएं देखिए, ईजिप्ट में देखिए या चीन में देखिए, अगर उनको किसी से इज्जत मिलती है तो वह है भारत। वे कहते हैं कि आप हमारे गुरु हैं। अभी कुछ दिनों पहले यह बात सामने आयी थी कि चीन, भारत को गुरु मानता है। हमसे कई चीनी राजदूत यह कह चुके हैं कि हमें ताईवान, साउथ कोरिया और सिंगापुर बुद्धिज्म सिखाने की कोशिश करते हैं और उन्होंने कन्यूशियनिज्म के संस्थान बना रखे हैं। जब चीनियों से अन्य देशों द्वारा यह कहा जाता है कि बुद्धिज्म सीखने के लिए हमारे यहां आइए, तो चीनी कहते हैं कि अगर उन्हें कुछ सीखना है तो वे भारत से सीख सकते हैं, क्योंकि भारत में सब प्रमाणिक है।

जब मैं भविष्य के बारे में सोचता हूं तो मुझे लगता है कि आने वाले अगले 20–30 सालों में हम आर्थिक रूप से शायद पहली नंबर की ताकत बन जाएं, यह कोई माने या न माने। अगर हम चीन की या अन्य किसी देश की अंदरूनी अखबारों को पढ़ते हैं तो वे कहते हैं कि भारत अभी भी बहुत कमजोर है, वहां के लोग बहुत सलीके से बात करते हैं और सब बातें मान जाते हैं। अगले 10–20 साल में हमें यह मालूम नहीं है कि भारतीय युवा पीढ़ी आने वाले दिनों में हमसे बात करेगी या नहीं। तो यह आवश्यक है कि जो यहां थिंक टैंक्स काम कर रहे हैं वे इन सब विषयों का अध्ययन करें।

भारत की जो विशेषताएं है और यदि उन विशेषताओं को विश्व की प्रगति के लिए हम रखना चाहते हैं, तो यह जरुरी है कि हम उन सब

copyright © SPMRF, 2013

देशों को समझाएं कि भारत की जो विशेषता है, उनको खत्म मत होने दीजिए, उसमें आपको भी लाभ है। उन विशेषताओं के अध्ययन की बहुत आवश्यकता है।

हम बाहर के कई मुल्कों में रहते रहे हैं। वहां पर सबलोग यह कहते हैं कि भविष्य में भारत की स्थिति मजबूत दिखायी देती है। लेकिन भारत एक अकेला देश हैं, जहां अपने भविष्य को पहचान कर भी उसके विपरीत दिशा में चल देता है। क्योंकि आपको लगता है कि पता नहीं भविष्य में मजबूत होने के बावजूद क्या नुकसान हो जायेगा।

मुझको अभी भी याद है कि 1997 में आर्थिक संकट पैदा हुआ था। पश्चिमी देशों के प्रतिनिधियों ने उस समय एशिया के संदर्भ में एक बात सही कही थी कि अभी तक ये बच्चों की तरह व्यवहार करते थे। हम इनको मदद के नाम पर झुनझुना पकड़ा देते थे। अब वे कहने लगे कि नहीं साहब हम तो अब बड़े हो गए हैं, यह शताब्दी तो साउथ ईस्ट एशिया, ईस्ट एशिया या एशिया की शताब्दी होगी। इस पर पश्चिमी देशों ने कहा कि आ जाओ भईया, अब मैदान में आ जाओ और बराबर का खेल खेलते हैं। जिसका परिणाम यह हुआ कि आर्थिक संकट पैदा हो गया क्योंकि अन्य देशों द्वारा लिया गया उधार का पैसा सभी को वापस करना पड़ा। इसके बाद हमें यह ध्यान दिलाया गया कि अंत में हमको अपने पैरों के ऊपर ही खड़ा होना पड़ेगा।

अमेरिका के सेक्यूरिटी डाक्टरेंस को नंबर एक दुश्मन या दोस्त राज्य माना जाता है, तो भारत को नबंर दो। हम किस प्रकार से अपने ताकत और कमजोरी की प्रशंसा कर सकते हैं अन्य देशों की तुलना में, यह विचार करने का विषय है। हमारी अद्वितीय विशेषताएं हैं, हमारी ताकत हैं, हमारी उपभोक्ता बाजार है, हमारे पास ज्ञान का भंडार है। यह सब हमारे हैं। हमें इन गुणों का प्रबंधन के माध्यम से ताकत के रुप में रुपान्तरित करना चाहिए।

भारत में चीन के एक राजदूत से चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने उनके भारत में आने से पहले उनसे कहा था कि चीन में सब भारत की आलोचना करते हैं, आप उसमें बह मत जाना। उस आलोचना के अन्दर भारत की बहुत बड़ी ताकत भी छुपी हुई है। चीनी प्रधानमंत्री ने राजदूत से कहा कि मैं चाहूंगा कि भारत की जो बहुत बड़ी ताकतें हैं उन्हें दस बिन्दुओं में लिखकर मुझे दीजिए और यह भी बताएं कि हमें भारत से क्या सीखना है।

आप देखेंगे कि विदेशों में जो भारतीय मूल के लोग गए हैं, उन्होंने वहां बहुत अच्छा कार्य किया है। लेकिन सबके सब होटल्स, बैंक, ट्रैवेल एजेन्टस जैसे क्षेत्र में हैं। इन सब क्षेत्रों में भारतीय मूल के लोग प्रबंधकीय पद व सर्विस सेक्टर में कार्यरत हैं। जब उनके पदोन्नति या सी.ई.ओ. बनने की बात आती है तो वे कहते हैं कि आप नहीं बन सकते हैं, इनको आगे नहीं बढ़ने देना है। तो वे इस प्रकार से हमें अपने आप में ही सीमित कर देते हैं, इसलिए हमें खुद से आगे बढ़ना है, यह सोचना होगा।

मुझे याद है कि भारत में चीन के एक राजूदत से चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने उनके भारत में आने से पहले उनसे कहा था कि चीन में सब भारत की आलोचना करते हैं, आप उसमें बह मत जाना। उस आलोचना के अन्दर भारत की बहुत बड़ी ताकत भी छुपी हुई है। चीनी प्रधानमंत्री ने राजदूत से कहा कि मैं चाहूंगा कि भारत की जो बहुत बड़ी ताकते हैं उन्हें दस बिन्दुओं में लिखकर मुझे दीजिए और यह भी बताएं की हमें भारत से क्या सीखना है। भारत का चाहे पूंजी बाजार हो या चाहे लोकतंत्र हो, इत्यादि जो अच्छी बाते हैं आप मुझे लिखिए। कमजोरियों के बारे में तो सब लिखने में लगे हुए हैं, पूरे विश्व के अखबार यह लिख रहे हैं, यहां तक कि भारत के खुद के लोग यह लिखने में लगे रहते हैं कि उनकी क्या कमजोरियां हैं। तो हमें सकारात्मक बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए।

क्षेत्रीय चुनावों में इस बार जनता के अन्दर जो रोष है वह इस बार बहुत ज्यादा है। जबकि बौद्धिक बातें थोड़ा कम है।

विदेशनीति के विषय में यहां पर अभी जो विचार उठे हैं कि हमको एक दूसरे से लड़ाई नहीं करनी है। हम बिना लड़ाई किए हुए भी

copyright © SPMRF, 2013

अपनी ताकत बढ़ा सकते हैं। वह ताकत कैसे बढ़ाई जाए, इसके बारे में सोचना होगा।

पहली बार ऐसा हुआ है जब अमेरिका, चीन, जापान सबके सब यह कोशिश कर रहे हैं कि भारत को साथ लें के चलें। अब वह समय निकल गया है जब वे भारत को भूल जाते थे। वे कहते थे कि भारत तो बिल्कुल 2 प्रतिशत विकास दर वाला देश है। अब वह बातें खत्म हो चुकी हैं। अब हमको अपनी तैयारी करनी है कि किस प्रकार से हम लोग आगे बढें और एशिया तथा विश्व को भी आगे बढ़ने में मदद करें।

पाकिस्तान के विदेश सचिव ने मुझसे कहा था कि देखिए आपने चीन के बैक यार्ड में अपनी शक्ति और रिश्ते बढ़ाकर उनको हड़ बड़ा दिया है। उन्होंने कहा कि आपने अपने रिश्ते साउथ ईस्ट एशिया व ईस्ट एशिया में इतना मजबूत कर लिए हैं कि चीन वाले थोड़े चिंतित लगते हैं। चीन ने तो साउथ एशिया में भारत और पाकिस्तान को ब्लाक करके आमने-सामने कर दिया और लेकिन फिर भारत अब हमारे पीछे ही पड़ने लगा। अब भारत सबको यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि ईस्ट एशिया व पूरे एशिया में भारत बेहतर साथी है, चीन के मुकाबले में। इसपर चीन ने पाकिस्तान से कहा कि आप भारत से दोस्ती कीजिए और भारत को फिर अपनी तरफ खीचिंए, भारत तो हमारी तरफ बढ़ता चला आ रहा है। तो यह भी सोचने की बात है कि किसप्रकार से इस तरह के विचार उठते है।

मुझे याद है कि पाकिस्तान के विदेश सचिव ने मुझसे कहा था कि देखिए आपने चीन के बैक यार्ड में अपनी शक्ति और रिश्ते बढ़ाकर उनको हड़बड़ा दिया है। उन्होंने कहा कि आपने अपने रिश्ते साउथ ईस्ट एशिया व ईस्ट एशिया में इतना मजबूत कर लिए हैं कि चीन वाले थोड़े चिंतित लगते हैं। चीन ने तो साउथ एशिया में भारत और पाकिस्तान को ब्लाक करके आमने–सामने कर दिया और लेकिन फिर भारत अब हमारे पीछे ही पड़ने लगा। अब भारत सबको यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि ईस्ट एशिया व पूरे एशिया में भारत बेहतर साथी है, चीन के मुकाबले में। इस पर चीन ने पाकिस्तान से कहा कि आप भारत से दोस्ती कीजिए और भारत को फिर अपनी तरफ खीचिंए, भारत तो हमारी तरफ बढ़ता चला आ रहा है। तो यह भी सोचने की बात है कि किस प्रकार से इस तरह के विचार उठते हैं, हमें इस पर भी सोच–विचार करना चाहिए।

हमारी सेना के अन्दर यह भावना आ गयी है कि उनको पूरा मौका नहीं दिया गया है। कूटनीति में कमी के कारण हर बार जहां वे जितते हैं, उसे छोड़कर आना पड़ता है। मैं यह बात आप लोगों के साथ साझा करना चाहता हूं कि जब 1947 में हमको आजादी मिली तो उस वक्त नक्शे गायब हो चुके थे। उनमें से अधिकतर सीमा के थे। जो छायांकित क्षेत्र थे वे हमें मिले हैं। एक स्कांटिस प्रोफेसर की मैं एक किताब पढ़ रहा था। उन्होंने पुस्तक में लिखा है कि उस समय जितनी भी औपनिवेशिक शक्तियां थी वे सारे के सारे पुराने नक्शे व पुरानी फाइलें ले गए। उनके बिल्कुल टुकड़े–टुकड़े किये गए और उनको गहरे समुद्र में ले जाकर हेलीकाप्टर से वहां डाल दिया ताकि उन्हें कभी लहरें वगैरह भी वापस लेकर न आ सकें। जहां–जहां उनको लगा उन्होंने उसके समान नई फाइलें बना दी। जो वास्तविक राज्य थे, जिसमें उनको मालूम था कि कैसे उनका जनसंहार किया गया हैं, जो उनके प्रमुख केन्द्र हो सकते थे, उनको उठाकर वे ताले में बंद कर दिया। हाल ही में एक छोटा सा फाईल निकला था, जो किनीया की माउ माउ क्रांति के संदर्भ में है। वह भी इसलिए निकल पाया क्योंकि अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा के दादा और उनकी जनजाती इसमें भागीदार थे। जब अमेरिका का दबाव पड़ा तो वह फाइल बाहर निकल कर आयी। जिसके लिए मुआवजा के तौर कुछ मिलियन डॉलर शायद दिया जा रहा है।

देखिए मैं केवल यह कहना चाहूंगा कि भारत के ऊपर दबाव पड़ता है। जीते हुए युद्ध के दौरान हमारे एक हजार लोगों के मरने के बावजूद वह हिस्सा छोड़ना पड़ता है। चाहे रूस दबाव डाले, चाहे अमेरिका दबाव डाले, चाहे ब्रिटेन दबाव डाले, दबाव एकदम से पड़ना

copyright © SPMRF, 2013

शुरू होता है क्योंकि कहा जाता है कि आपके इरादे सही नहीं है और आपको वह हिस्सा तुरन्त छोड़ना है। और कहते हैं कि आप दूसरे मुल्कों को नहीं रहने देना चाहते हैं।

हमें यह भी हमको ध्यान रखना होगा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद प्रारम्भ में यह निर्णय हुआ था कि पूरा एशिया च्यांग कायी सेख को दे दिया जाएगा। यह बात और है कि वे चाइना को भी अपने साथ न रख सके और इसलिए उन्होंने कहा कि बाकी एशिया का भाग नहीं चाहिए, उसे आजाद कर दीजिए। उस समय ब्रिटेन और फ्रांस दोनों आपस में मिल गए थे। उन्होंने कहा कि हमें अपनी पुरानी औपनिवेश क्षेत्र चाहिए, नहीं तो अमेरिका कल हमारे ऊपर एक–एक करके दबाव डालेगा। हमें ऐतिहासिक धरोहर को भी अध्ययन कर ध्यान में रखना है।

मैं यह भी कहूंगा कि जो क्रिश्चियन नीति और इस्लाम का जो झगड़ा चलता आ रहा है, वह चलता रहेगा। उनमें आपस में दोनों की अलगाववादी विचारधारा है। वे यह जानते हैं कि उन्हें एक दूसरे को कैसे बांटना है। हम लोगों को मालूम नहीं है, हम केवल अपने तरीके से सोचने का प्रयास करते हैं कि कैसे सबके साथ में मिलकर रहा जाए। चाहे सर्वधर्म संभव हो, चाहे सेक्युलरिज्म हो। लेकिन हमको यह भी ध्यान में रखना पड़ेगा कि यह हमारे चारों तरफ जो आग फैल रही है, वह कभी न कभी हमको पकड़ेगी। हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि अपने यहां और अपने पड़ोसियों के यहां यह बताएं कि हमारे कुछ मूल्य हैं, जिससे हमें आर्थिक लाभ मिल सकता है और आपको भी मिल सकता है। जिससे स्थायित्व आ सकता है।

क्रिश्चियन नीति और इस्लाम का जो झगड़ा चलता आ रहा है, वह चलता रहेगा। उनमें आपस में दोनों की अलगाववादी विचारधारा है। वे यह जानते हैं कि उन्हें एक दूसरे को कैसे बांटना है। हम लोगों को मालूम नहीं है, हम केवल अपने तरीके से सोचने का प्रयास करते हैं कि कैसे सबके साथ में मिलकर रहा जाए। चाहे सर्वधर्म संभव हो, चाहे सेक्युलरिज्म हो। लेकिन हमको यह भी ध्यान में रखना पड़ेगा कि यह हमारे चारों तरफ जो आग फैल रही है, वह कभी न कभी हमको पकड़ेगी। हमें यह कोशिश करना चाहिए कि अपने यहां और अपने पड़ोसियों के यहां यह बताएं कि हमारे कुछ मूल्य हैं, जिससे हमें आर्थिक लाभ मिल सकता है और आपको भी मिल सकता है। जिससे स्थायित्व आ सकता है।

अगर लड़ाई करनी है तो हम थोड़ा सा अपने देश से दूर हट कर उनको कहेंगे कि चलों वहां लड़ाई कर लो, अफगानिस्तान में कर लो, सिंगचियान में कर लो और जहां करनी है वहां कर लो, क्योंकि हमको मालूम है कि लड़ाई की जगह पैसा और ज्ञान की नीतियों में हम ज्यादा अच्छे हैं। जो हथियार हमारे पास हैं, वह हफ्ते दस दिन में सब खत्म हो जायेंगे और फिर बाहर से मंगाने पड़गें। हमें अपनी क्षमता बढ़ानी पड़ेगी। हमें अपने हथियारों और अपने तकनीक को मजबूत करने की जरुरत है। इन सबके लिए हमें समय चाहिए।

यही सब बाते मैं आप लोगों के सामने रखना चाहता था। आज बहुत अच्छा मौका है कि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् किसी दूसरे संस्थान के साथ मिलकर विदेशनीति के जो मूल विचार हो सकते हैं, उनको साथ में लाने का प्रयास किया है। हमें इस तरह की बैठकें आगे भी करते रहना चाहिए। आशा है कि इस हेतु आप सबका सहयोग मिलता रहेगा।

बहुत–बहुत धन्यवाद।

copyright © SPMRF, 2013

Policy with Pakistan must be a Policy based on Strength

"So far as Pakistan is concerned, what exactly is our policy? As I have stated repeatedly there must be an overall policy between India and Pakistan. We are supposed to be at war with Pakistan in Kashmir. Pakistan is the aggressor there...In all other matters, we are trying to carry on a conciliatory policy with them. Our policy must be based on reciprocity, complete reciprocity. If we get good treatment from Pakistan, Pakistan gets good treatment from us. If we do not receive good treatment, it is no use our merely saying that we carry on a policy of negotiation with them and ultimately become weak and humiliated...Are we so weak as merely to watch and appeal? Today, what is needed is that the people of India must get a proper lead from their Government. If, God forbid, the situation worsens, India will have to depend as much on her arms and ammunitions or military strength as on the united moral strength of the people...Today two things are vitally necessary. We have to strengthen our military position and if we cannot do it alone, we shall have to do it in collaboration with others with whom we can stand on a common ideology. Then, we shall have to strengthen internal strength and peace and satisfactorily solve the economic problem...so that we can create that solidarity and stability which would be impregnable both from the national and international standpoints."

- Dr. Syama Prasad Mookerjee

(Participating in the debate on the "International Situation" in the Lok Sabha, 6th ***December, 1950)***

पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका
Wisdom with valour brings glory to the nation

Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation
11, Ashok Road, New Delhi-110001, Tel. 011- 48005769, Email: spmrfoundation@gmail.com
Join Us on Facebook : https://www.facebook.com/spmrfoundation